



पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 12

अंक : 10

जून, 2025

मूल्य : ₹2.00



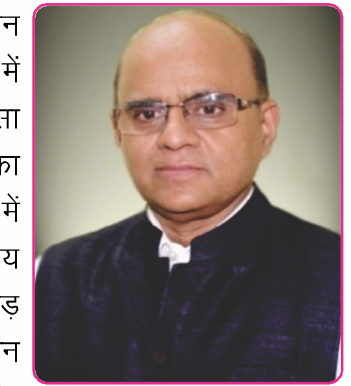
मार्गदर्शन : कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित

कुलगुरु सन्देश

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में डेयरी उद्योग की भूमिका महत्वपूर्ण: कुलगुरु

विश्व दुग्ध दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। भारतीय अर्थव्यवस्था तथा पशुपालन में गहरा सम्बन्ध है। पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास और स्थिर आय में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कृषि क्षेत्र में पशुधन का अनुमानित हिस्सा लगभग 30 प्रतिशत है। भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुपालन की भूमिका को देखते हुए “ऑपरेशन फ्लड” के माध्यम से दूध उत्पादन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। डेयरी एक कृषि आधारित उद्योग है। कृषि मंत्रालय की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि डेयरी उद्योग प्रति वर्ष लगभग 4.2 करोड़ रोजगार पेशकश करने की क्षमता रखता है। भारत दुग्ध उत्पादन में प्रथम स्थान पर है। भारत विश्व के कुल दूध उत्पादन में 24 प्रतिशत का योगदान दे रहा है।

यह उद्योग राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में 5 प्रतिशत का योगदान दे रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दूध को एक पूर्ण संतुलित आहार माना है। मानव व पशु के जीवन का पहला भोजन दूध ही होता है, जो जीवन पर्यन्त अच्छे स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। दूध के महत्व को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन ने हर वर्ष एक जून को विश्व दुग्ध दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत की थी। विश्व दुग्ध दिवस का आयोजन सर्वप्रथम वर्ष 2001 में किया गया था। यह दिवस विशेष रूप से दूध व डेयरी से जुड़े उत्पादों की उपयोगिता को जन-जन तक पहुंचाने के लिए मनाया जाता है। विश्व दूध दिवस-2025 का विषय “आइए डेयरी की शक्ति का उत्सव मनाएं” है, जो समुदायों, स्वास्थ्य और स्थिरता पर डेयरी क्षेत्र के सकारात्मक प्रभाव पर प्रकाश डालता है। इस वर्ष विश्व दुग्ध दिवस मनाने का उद्देश्य पोषण, पर्यावरणीय स्थिरता और सामाजिक व आर्थिक विकास में वैश्विक डेयरी क्षेत्र के योगदान के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। विश्व में दूध व दूध उत्पादों की खपत में तेजी से वृद्धि देखी जा रही है। भारत में प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता लगभग 471 ग्राम है। दूध की उपलब्धता बढ़ने से भारतीयों के खान-पान में भी काफी बदलाव आने लगे हैं। भारत का दूध उत्पादन में प्रथम स्थान में भारतीय डेयरी व्यवसाय की महत्वपूर्ण भूमिका है। छोटे व सीमान्त किसान और भूमिहीन मजदूर अपनी आजीविका के लिए डेयरी उद्योग पर निर्भर है। पिछले कुछ दशकों से अनुकूल नीतिगत वातावरण, नस्ल सुधार और दुग्ध विपणन प्रणाली के विकास के कारण दुग्ध उत्पादन में लगातार वृद्धि हो रही है। डेयरी उद्योग को ओर अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए पशुओं की उत्पादकता बढ़ाने, बेहतर स्वास्थ्य प्रबंधन, प्रजनन सुविधाओं पर ओर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, यदि भारत को डेयरी निर्यातक देश के रूप में उभरना है तो उचित उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन के बुनियादी ढांचे को विकसित करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय भी अपनी विभिन्न इकाईयों के माध्यम से किसानों व पशुपालकों को डेयरी को एक व्यवसाय के रूप में विकसित करने के लिए प्रशिक्षित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। विश्व दुग्ध दिवस के अवसर पर पशुपालन क्षेत्र से जुड़े सभी पशुचिकित्सकों, पशुचिकित्सा कार्मिकों, पशुपालक व किसान भाईयों को पुनः शुभकामनाएं व बधाई।



आचार्य मनोज दीक्षित

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

—महात्मा गांधी





विश्वविद्यालय समाचार

वैटरनरी विश्वविद्यालय ने मनाया 16वां स्थापना दिवस

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के 16वें स्थापना दिवस पर कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित की अध्यक्षता में 19 मई को भव्यता पूर्वक आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, वैटरनरी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने विश्वविद्यालय की प्रगति के सोपानों की विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय ने अल्पकाल में ही आशातीत प्रगति की है। संगठित एवं सुनियोजित प्लानिंग एवं कठिन परिश्रम से विश्वविद्यालय का सफल क्रियान्वयन हो पाया है। प्रो. गहलोत ने कहा कि विश्वविद्यालय की प्रगति का मानक उसके विद्यार्थियों का सफल विकास है। उन्होंने विद्यार्थियों को विभिन्न आई.सी.ए.आर. संस्थानों तथा बी.एस. एफ. में चयन की बधाई दी। कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित ने विश्वविद्यालय के 16वें स्थापना दिवस की सभी को बधाई देते हुए कहा कि राजुवास विकास की अपार संभावनाओं की ओर आगे बढ़ रहा है तथा इस विकास की गति को आगे बढ़ाने हेतु विश्वविद्यालय को नवीन शोध कार्य एवं उपलब्ध संसाधनों के पूर्ण उपयोग पर दृढ़ संकल्पित होना होगा। कुलगुरु आचार्य दीक्षित ने कहा कि पशु स्वास्थ्य की परिकल्पना के बिना हम मानव एवं वातावरण के स्वास्थ्य की परिकल्पना नहीं कर सकते हैं। कार्यक्रम के प्रारम्भ में निदेशक क्लिनिक प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम की समाप्ति पर अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. पंकज धानवी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की प्रथम महिला श्रीमती आरती दीक्षित, श्रीमती अरुणा गहलोत, कार्यकारी अधिष्ठाता प्रो. उर्मिला पानू सहित विश्वविद्यालय के डीन-डॉयरेक्टर, शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कुलगुरु आचार्य दीक्षित एवं मुख्य अतिथि प्रो. गहलोत ने इस अवसर पर महाविद्यालय परिसर में पौधारोपण भी किया।



नव निर्मित पानी की टंकी का लोकार्पण तथा कन्या छात्रावास के नवीन भवन का हुआ शिलान्यास

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर परिसर में कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित के कर कमलों से स्वच्छ पेय जल आपूर्ति हेतु जल संग्रहण कुण्ड, पम्प हाऊस एवं 4 लाख लीटर क्षमता वाली नव निर्मित पानी की टंकी का लोकार्पण 17 मई को किया गया। कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित ने बताया कि पानी की टंकी के निर्माण से महाविद्यालय के विभिन्न विभागों, स्टाफ क्वार्टर एवं पशु फार्म तक शुद्ध पेय जल आपूर्ति सुनिश्चित हो पायेगा। कुलगुरु आचार्य दीक्षित ने कहा कि विश्वविद्यालय में निर्माण कार्य भविष्य की संभावनाओं, आवश्यकताओं एवं सुनियोजित कार्ययोजना के तहत होना चाहिए जिससे बजट के सदुपयोग के साथ-साथ आवश्यकताओं की पूर्ति भी सुनिश्चित होती है। कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित ने इस अवसर पर महाविद्यालय परिसर में अरुंधति कन्या छात्रावास के नवीन भवन निर्माण हेतु शिलान्यास किया। कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित ने बताया कि वर्तमान समय में वैटरनरी स्नातक में छात्राओं का प्रवेश रुझान बढ़ा है और लम्बे समय से कन्या छात्रावास की मांग चल रही थी। 20 कमरों के इस नवीन अरुंधति कन्या छात्रावास के निर्माण से विश्वविद्यालय में छात्राओं को स्वच्छ एवं सुरक्षित आवास उपलब्ध हो पायेगा। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के वित्त नियन्त्रक अरविन्द बिश्नोई, कुलसचिव प्रो. हेमन्त दाधीच, अधिष्ठाता स्नातकोत्तर अध्ययन प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक पी.एम.ई. प्रो. उर्मिला पानू, अधिष्ठाता डेयरी महाविद्यालय, बीछवाल, प्रो. राहुल सिंह पाल, प्रभारी निदेशक कार्य (भू संपदा) डॉ. नरेन्द्र सिंह राठौड़, विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।



स्वयंसेवकों का नागरिक सुरक्षा प्रशिक्षण

वैटरनरी विश्वविद्यालय के पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र द्वारा बीकानेर जिले की विभिन्न कॉलेजों के राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों के लिए एक दिवसीय नागरिक सुरक्षा प्रशिक्षण एवं आपदा प्रबंधन मॉक ड्रिल 9 मई को आयोजित की गयी। केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि राष्ट्रव्यापी संकट की इस घड़ी में राज्य सरकार के दिशा निर्देशों के तहत राष्ट्रीय सेवा योजना, स्काउट्स एवं गाईड, राष्ट्रीय कैंडेट कोर, नेहरू युवा केन्द्र, पशुपालको एवं आम नागरिकों के लिए नागरिक सुरक्षा प्रशिक्षण एवं आपदा प्रबंधन मॉक ड्रिल की श्रृंखला शुरू की गयी है। आगामी दिवसों में उपरोक्त संगठनों के स्वयंसेवकों के लिए केन्द्र के द्वारा लगातार नागरिक सुरक्षा प्रशिक्षण आयोजित किया जायेगा। प्रशिक्षण में केन्द्र के विशेषज्ञ शैलेन्द्र सिंह शेखावत ने राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों को ब्लैक आउट प्रक्रिया एवं बचाव की आपातकालीन पद्धतियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान कर स्वयंसेवकों की आपदा प्रबंधन मॉक ड्रिल भी आयोजित करवायी ताकि मानव जीवन एवं पशुधन की हानि को न्यूनतम किया जा सके।





वैटरनरी विश्वविद्यालय में मनाया विश्व दुग्ध दिवस

वैटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर एवं डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय (बीछवाल), बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में विश्व दुग्ध दिवस "आइए डेयरी की शक्ति का उत्सव मनाएं" थीम पर 31 मई को आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित ने विश्वविद्यालय के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को विश्व दुग्ध दिवस के अवसर पर शुभकामनाएं प्रेषित की। प्रति कुलपति प्रो. हेमन्त दाधीच ने अपने संबोधन में कहा कि राजस्थान दूध उत्पादन में देश का अग्रणी राज्य है। राजस्थान के दुग्ध उत्पाद राजस्थान ही नहीं अपितु विदेशों में भी निर्यात किया जा रहा है। दुग्ध एवं दुग्ध उत्पादों में मिलावट एक गंभीर समस्या है, जिसके निराकरण हेतु जागरूकता आवश्यक है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रधान वैज्ञानिक एवं पूर्व निदेशक राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर डॉ. ए.के. घुरई ने ऊट के दूध की महत्ता पर प्रकाश डाला और बताया कि ऊट का दूध मधुमेह, उच्च रक्तचाप एवं अन्य व्याधियों के उपचार में सहायक है। विशिष्ट अतिथि प्रबंधक, प्लांट उरमूल डेयरी इंजी. ओमप्रकाश भांबू ने राज्य सरकार की विभिन्न दुग्ध संबंधित परियोजनाओं के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि उरमूल डेयरी राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान के साथ मिलकर ऊट के दूध एवं गुणवत्ता युक्त दुग्ध एवं दुग्ध उत्पाद को आम जन के लिए उपलब्ध करवाने के लिए प्रयासरत है। कार्यक्रम के प्रारंभ में अधिष्ठाता, डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. राहुल सिंह पाल ने सभी का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा बताई एवं दुग्ध को संपूर्ण आहार बताते हुए रोजमर्रा के जीवन में इसकी उपयोगिता एवं आवश्यकता के बारे में बताया।



यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी

गांव बम्बलू में पशुचिकित्सा शिविर का आयोजन

यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर द्वारा गोद लिए गांव बम्बलू में 24 मई को पशुचिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। निदेशक क्लिनिकल प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि वैटरनरी महाविद्यालय एवं पशुपालन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस चिकित्सा शिविर में गायों, भैसों, ऊंटों, श्वान आदि 104 पशुओं की विभिन्न प्रकार की व्याधियों जैसे बांझपन, फुराव, कृमिनाशन, खुजली, आफरे, पायका, लंगडेपन इत्यादि का उपचार किया गया। कार्यक्रम में यूएसआर समन्वयक डॉ. मैना कुमारी ने इस परियोजना के उद्देश्य बताते हुए पशुओं के उन्नत प्रबंधन एवं संतुलित आहार की महत्ता पर प्रकाश डाला। पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र के डॉ. सोहेल कुरैशी एवं शैलेन्द्र शेखावत ने विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं में पशुओं पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभावों उल्लेख करते हुए उनके प्रबंधन तकनीकों के बारे में बताया। शिविर के दौरान पशुपालकों को मिनरल मिक्सचर का भी निःशुल्क वितरण किया गया। शिविर में डॉ. अमित चौधरी, डॉ. ताराचंद नायक, डॉ. भगीरथ बिश्नोई, डॉ. नरेंद्र एवं स्नातकोत्तर छात्र आदि विषय विशेषज्ञों ने अपनी सेवाएं दी। कार्यक्रम के आयोजन में ग्राम सरपंच हेतराम कूकना, रामदेव, मनोज, सीताराम एवं सभी ग्रामवासियों का पूर्ण सहयोग रहा।



खतेपुरा में पशु टीकाकरण एवं कृमिनाशक हेतु जागरूकता अभियान

पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर द्वारा दिनांक 22 मई को यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत गोद लिये गांव खतेपुरा में पशु टीकाकरण एवं कृमिनाशक हेतु जागरूकता अभियान चलाया गया। यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के समन्वयक डॉ. संजय कुमार रेवानी तथा स्नातकोत्तर विद्यार्थियों ने पशुपालकों को पशुओं में टीकाकरण एवं कृमिनाशक की जानकारी दी तथा इनके उपयोग हेतु प्रेरित किया।

रामपुरावास में कृषि विस्तार एवं पशुपालन गतिविधियां

डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बस्सी (जयपुर) द्वारा दिनांक 31 मई को यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत गोद लिये गांव रामपुरावास में कृषि विस्तार एवं पशुपालन से सम्बन्धित गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में किसानों को कृषि विभाग की विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई। यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के समन्वयक डॉ. शफाअत अहमद खान ने बताया कि इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के डॉ. महेन्द्र कुमार, शिक्षण सहायक का योगदान रहा।

जोरजी का खेड़ा में पशुचिकित्सा शिविर

वैटरनरी महाविद्यालय, नवानियां (उदयपुर) द्वारा यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत अंगीकृत गांव जोरजी का खेड़ा में दिनांक 18 मई को पशुचिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। डॉ. टीकम चन्द गोयल, सहायक आचार्य एवं समन्वयक, यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी एवं डॉ. मितेश गौड़, सहायक आचार्य, वैटरनरी कॉलेज, नवानियां ने बताया कि इस शिविर में 52 बकरियों, 23 भैसों, 17 गायों एवं 5 श्वानों सहित कुल 97 पशुओं का स्वास्थ्य परीक्षण एवं उपचार किया गया। शिविर में पशुओं में परजीवी जनित रोगों की रोकथाम हेतु कृमिनाशक दवाओं का वितरण भी किया गया। शिविर में डॉ. जगदीश दास वैष्णव, डॉ. ग्यारसीलाल यादव सहित मेडिसीन तथा मादा रोग एवं प्रसूति विभाग के पीजी स्कॉलर्स ने अपनी सेवाएं प्रदान की।



गांव कतरियासर में पशुचिकित्सा शिविर का आयोजन

यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीछवाल (बीकानेर) द्वारा गोद लिए गांव कतरियासर में 28 मई को पशुचिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। निदेशक क्लिनिकस प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि डेयरी विज्ञान प्रौद्योगिकी महाविद्यालय तथा पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस चिकित्सा शिविर में गायों, भैंसों, ऊंटों आदि विभिन्न 157 पशुओं की विभिन्न प्रकार की व्याधियों जैसे बांझपन, फुराव, कृमिनाशन, खुजली, आफरे, पायका, लंगड़ेपन इत्यादि का उपचार किया गया। कार्यक्रम में डॉ. सुनील कुमार, सहायक आचार्य एवं समन्वयक, यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी ने इस परियोजना के उद्देश्य बताते हुए पशुओं के संक्रामक रोग एवं उससे बचाव के प्रबंधन की महत्ता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के दौरान पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केंद्र के डॉ. सोहेल मोहम्मद कुरेशी एवं शैलेन्द्र सिंह शेखावत ने विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के तरीकों एवं प्रबंधन के बारे में विस्तृत जानकारी दी। शिविर के दौरान पशुपालकों को आवश्यक दवाइयों तथा मिनरल मिक्सचर का भी निःशुल्क वितरण किया गया। शिविर में डॉ. प्रमोद कुमार धतरवाल, डॉ. संध्या मोरवाल, डॉ. नरेंद्र कुमार एवं स्नातकोत्तर छात्र-छात्राएं डॉ. राहुल चौधरी, डॉ. जगदीश पुरी, डॉ. मनोज धन, डॉ. मयंक वारीसवाल, डॉ. शिल्पा राठौड़, डॉ. सपना मान तथा डॉ. रामस्वरूप ने अपनी सेवाएं दी। कार्यक्रम के आयोजन में ग्राम सरपंच सन्तोष देवी, सुरजाराम ज्याणी, बीरबल ज्याणी, मांगीलाल ज्याणी व ग्राम सहायक मिलन कुमार यादव आदि ग्रामीणों का पूर्ण सहयोग रहा।



पशु प्रजनन में पौराणिक पशु चिकित्सा पद्धति का महत्व

पशु स्वास्थ्य प्रबंधन में प्राकृतिक उपचार के बढ़ते रुझानों में औषधीय पौधों का उपयोग एक वैकल्पिक प्रणाली के तौर पर देखा जा रहा है। पौराणिक पशु चिकित्सा पद्धति में पशुओं के उपचार के लिये पौधों एवं उनके उत्पादों का उपयोग किया जाता है जो कि स्थानीय उपलब्धता के साथ ही दुष्प्रभाव रहित होते हैं। पशु स्वास्थ्य के साथ साथ प्रजनन क्षमता में कमी भी पशुओं की उत्पादकता को प्रभावित कर पशुपालकों को काफी आर्थिक नुकसान पहुंचाती है। क्षेत्रीय स्तर पर इन विकारों का ईलाज करने के लिए प्रयुक्त हार्मोनल दवाइयों एवं अन्य औषधियां अच्छे परिणाम देती हैं लेकिन अधिक लागत, अवांछित प्रभाव एवं बार-बार पशु चिकित्सालय के दौरे पशुपालकों के लिए समस्या बनी रहती है। परम्परागत पशु चिकित्सा पद्धति देश-प्रदेश में ही नहीं अपितु कई विकासशील देशों में भी अपनी सुलभता, कम लागत, सांस्कृतिक प्राथमिकता एवं औषधीय पौधों की स्थानीय उपलब्धता आदि कारणों से नीति निर्माताओं की मानसिकता को बदलते हुये लोकप्रिय होती जा रही है। औषधीय पौधों में मौजूद प्राकृतिक तत्व पशुओं के स्वास्थ्य में सुधार एवं शरीर की कार्यिकी को सुचारु रखने में मदद करते हैं। ये पौधे कई तरह के एन्टीऑक्सीडेंट्स, विटामिन्स, खनिज लवण एवं औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं जो कि पशुओं की प्रजनन क्षमता एवं उत्पादकता को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

औषधीय पौधों के प्रजनन प्रबंधन सम्बंधी उपयोग :

मादा पशुओं का मद में नहीं आना (एनइस्ट्रस) एवं मद चक्र में आने के पश्चात भी उनका गर्भित नहीं होना प्रमुख प्रजनन विकार है। पशुओं को रेशमी कपास के पौधों की पत्तियों को उबले हुये चावल के पानी के साथ खमीर में मिलाकर बनाये पाऊडर एवं इसके अर्क की लगभग 500 मिलीलीटर मात्रा लगातार तीन दिन तक दिन में तीन बार पिलाने से प्रजनन संबंधित समस्याओं का उपचार किया जा सकता है। उबले हुए ग्वार एवं बाजरे के बीज तथा अंकुरित काले चने को खिलाकर गायों, भैंसों और बछड़ियों को हीट में लाया जा सकता है। फुराव लेने वाले पशुओं को ग्वारपाठा, पान के पत्ते, धामाबूटी, कितामरी आदि का पिसा हुआ मिश्रण लगातार पाँच दिनों तक पिलाने से इस समस्या का निवारण किया जा सकता है। रसोई में उपलब्ध मसाले एवं अन्य सामग्री जैसे काली मिर्च, हल्दी, जीरा, हरड, फनेरा वाही, गीला गुड आदि को लगातार पाँच दिनों तक पिलाकर गर्भाशय सूजन जैसी समस्या को दूर किया जा सकता है। पशुओं में आसान प्रसव के लिये बिच्छू बूटी की सूखी पत्तियां, उबला हुआ



बथुआ, कपूर कचरी के बीज, हाथीलता की पत्तियों का पेस्ट एवं किण्वित चावल आदि को खिलाया जा सकता है। गन्ने, बांस एवं कंठ गुलर की पत्तियों एवं चिचड़ा पौधे के रस को मवेशियों को देने से प्रसव पश्चात जेर को आसानी से गिराया जा सकता है। जबकि बची हुई जेर को बाहर निकालने के लिये बांस की पत्तियां, बाजरे का दाना मिश्रण, सडे हुए बांस का उबला पानी एवं बेरों के उबले हुये रस तथा गुड के मिश्रण आदि को औषधि के तौर पर दिया जा सकता है। नर पशुओं में बांझपन को दूर करने एवं वीर्य की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिये गोखरू, गिलोय, मराल एवं लौंग जैक आदि जड़ी बूटियों का उपयोग कर सकते हैं। औषधीय पौधों को उत्पादन अथवा उपचार के उद्देश्य से उपयोग करते समय उसकी मात्रा का खासकर ध्यान रखना चाहिये, वरना उसके नकारात्मक प्रभाव भी देखे जा सकते हैं। अतः इनका उपयोग व पशुओं को इनका सेवन बिना पशु चिकित्सक की सलाह अथवा विशेषज्ञ की सलाह बिना नहीं करना चाहिये।

डॉ. दिव्या चौधरी एवं डॉ. अमित कुमार
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर



पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा दिनांक 15 मई को गांव ढाढ़ीयावाली में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 24 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 6, 7, 8, 9, 13, 14 एवं 19 मई को गांव मंहगाया, मोरोली, ताखा, सहनाबली, अजान, गुनसारा एवं उबार गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 121 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा दिनांक 17 मई को केन्द्र परिसर में तथा दिनांक 19 मई को गांव ढाणी भोपालराम में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 60 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा दिनांक 17 एवं 31 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 36 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा दिनांक 1-6, 13-18 एवं 21-26 मई को छः दिवसीय ऑन कैम्पस पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 90 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 6, 8 एवं 12 मई को गांव रंगपुर, चडिण्डा एवं रानीपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 69 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरु)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरु) द्वारा दिनांक 8, 12, 19, 28 एवं 30 मई को गांव डालमान, साहवा, पहाड़सर, रामसरा ताल एवं भीमसाना गांवों में एक दिवसीय तथा दिनांक 1-6 एवं 13-18 मई को केन्द्र परिसर में छः दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 186 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा दिनांक 1-6 मई को केन्द्र परिसर में छः दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 30 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर (जयपुर) द्वारा दिनांक 31 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 25 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 16 मई को गांव पोहडका तथा दिनांक 23-26, 21-27 मई को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 103 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।





हीट स्ट्रोक (उष्माघात) से पशुओं को भी हो सकता है खतरा

हीट स्ट्रोक एक गंभीर अवस्था है, जिसमें अत्यधिक तापमान और उमस के कारण पशुओं का शरीर अत्यधिक गर्म हो जाता है और वह अपने शरीर का तापमान नियंत्रित नहीं कर पाते हैं। इसे आमतौर पर "गर्मी का प्रहार" भी कहा जाता है जहां पशुओं के शरीर का तापमान तेजी से 103° F (लगभग 39.4° C) से ऊपर चला जाता है और शरीर की कूलिंग प्रणाली (जैसे पसीना या हांफना) असफल हो जाती है। यदि समय रहते उचित देखभाल न की जाए तो पशुओं की जान तक ले सकती है।

हीट स्ट्रोक के प्रमुख कारण:

- ❖ **तेज धूप में रहना:** पशुओं को सीधा सूर्य के नीचे या बिना छाया के खुले में छोड़ देना अत्यधिक खतरनाक हो सकता है। गर्म जमीन और हवा शरीर का तापमान बढ़ा देती है।
- ❖ **बंद और गर्म स्थानों में छोड़ना:** जैसे कार, ट्रक या बिना वेंटिलेशन के कमरे में रखने से तापमान तेजी से बढ़ता है और पशु घुटन व गर्मी से पीड़ित हो जाते हैं।
- ❖ **शारीरिक मेहनत या व्यायाम:** विशेषकर दोपहर के समय यदि पशुओं से काम करवाया जाये (जैसे बेलगाड़ी खींचना इत्यादि) तो उनका शरीर ज्यादा गर्म हो जाता है।
- ❖ **पानी व छाया की कमी:** गर्मियों में पर्याप्त जल आपूर्ति और विश्राम के लिए ठंडी जगह न होने से पशु का शरीर ठंडा नहीं रह पाता है।
- ❖ **स्वास्थ्य सम्बन्धित कारक:** बीमारी की अवस्था में पशुओं में गर्मी सहन करने की क्षमता को कम कर देती है।
- ❖ **हाइपोथैलेमस का आघात:** हाइपोथैलेमस शरीर के "थर्मोस्टेट" की तरह काम करता है, जो शरीर के तापमान नियंत्रण में अहम् भूमिका निभाता है। अतः इसका आघात हो जाने पर शरीर का तापमान असंतुलित हो जाता है।

हाइपोथैलेमस हीट स्ट्रोक के लक्षण:

- ❖ अत्यधिक हांफना या तेजी से श्वास लेना।
- ❖ शरीर का बहुत गर्म होना (स्पर्श करने पर गर्म महसूस होना)।
- ❖ अत्यधिक लार टपकना, सूंसी या बेहाली होना, भूख में कमी।
- ❖ उल्टी या दस्त (कभी-कभी खून के साथ)।
- ❖ भ्रम या चक्कर आना, मांस-पेशियों में कंपन या झटके होना।
- ❖ बेहोशी की हालत होना, पशु को पसीना आना बंद हो जाना।
- ❖ आंख की श्लेष्मा झिल्ली का लाल हो जाना।
- ❖ दूध देने वाले पशुओं में दुग्ध उत्पादन में कमी होना।

बचाव के प्रभावी उपाय:

- ❖ पशु को छायादार और ठंडी जगह उपलब्ध करवायें।
- ❖ ठंडे एवं साफ पानी की निरन्तर व्यवस्था करें।
- ❖ गर्मी के समय व्यायाम या श्रम न कराएं एवं गर्म सतह पर चलने से बचाएं।
- ❖ नहलाना व गीले कपड़ों से पोछना।
- ❖ खान-पान में बदलाव।
- ❖ पशु को बंद वाहनो में न छोड़ें।
- ❖ यदि उपलब्ध हो सके तो पशु शाला में पंखे आदि का प्रबंध करें।
- ❖ पशुओं के बाड़े के आसपास छायादार पेड़ होने चाहिए, ताकि वातावरण में ठंडक बनी रहें।
- ❖ ज्यादा गर्मी होने पर पशुओं को पानी में नमक और चीनी मिलाकर देना चाहिए, ताकि पशुओं को गर्मी से राहत मिल सके।

यदि हीट स्ट्रोक हो जाए तो क्या करें

- ❖ पशुओं को तुरंत छायादार व ठंडे स्थान पर ले जायें।
- ❖ पशुओं के शरीर पर ठंडा पानी डाले या गीले कपड़े से शरीर को पोछें।
- ❖ पशु शाला में पंखा चलाकर या ठंडी हवा से तापमान घटाएं।
- ❖ पशु को ठंडा पानी पीने को दें, परन्तु जबरदस्ती भी न पिलाएं।
- ❖ पशुचिकित्सक की सलाह पर पशु का तुरंत उपचार करवाएं।

"पशु बोल नहीं सकते हैं, लेकिन महसूस करते हैं,

उन्हें भी ठंडी छाया और स्नेह की उतनी ही जरूरत है जितनी हमें"।

डॉ. दीपिका धूड़िया

सहायक प्राध्यापक, वेटेनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

बकरी पालन बना नियमित आय का स्रोत

बीकानेर जिले की लूनकरणसर तहसील के वार्ड नं. 10—उच्चगदेशर निवासी युवा पशुपालक संदीप थोरी कई वर्षों से पशुपालन तथा कृषि कार्य कर रहे हैं। चूंकि बारिश किसानों के लिए एक पहली बनी हुई है, ऐसे में पशुपालन व्यवसाय में स्वरोजगार की अपार संभावनाएं हैं। संदीप ने बकरी पालन को एक व्यवसाय के रूप में शुरू करने का निश्चय किया, उनके परिवार में 5—10 बकरी सदैव रहती थी जिनका उपयोग सिर्फ घर की जरूरत को पूरा करने के लिए ही किया जाता था, यहीं से उनको बकरी पालन की प्रेरणा मिली और उन्होंने 30 बकरियों से बकरी पालन व्यवसाय की शुरुआत की। संदीप पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर के वैज्ञानिकों से सम्पर्क में रहकर विभिन्न पशुपालन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेकर बकरियों के रख-रखाव, आवास एवं खानपान के साथ साथ पशुओं के आहार प्रबंधन, कृमिनाशक दवाईयों का उपयोग कर बकरियों के विभिन्न रोगों हेतु टीकाकरण, खनिज मिश्रण का महत्व आदि की जानकारी समय-समय पर प्राप्त कर उसे स्वयं ने अपनाकर संदीप ने वैज्ञानिक बकरी पालन में सफलता प्राप्त की। वर्तमान में इनके पास 50 बकरी है तथा पशु विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के मार्ग-दर्शन से उन्होंने बकरी पालन के साथ-साथ पशुओं के लिए अजोला की यूनिट स्थापित की है साथ ही नेपियर घास की यूनिट भी स्थापित की है जिससे पशुओं के लिए हरे चारे की कमी की पूर्ति हो सके। उनको बकरी पालन से वर्ष में लगभग 1.5 से 2.00 लाख की आमदनी होती है। संदीप का मानना है की बकरी पालन से कम खर्च में अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। इस सफलता से आसपास क्षेत्र में उन्होंने अपनी नई पहचान बना ली है। अपनी इस सफलता का श्रेय अपनी मेहनत के साथ-साथ पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर के वैज्ञानिकों को देते हैं।



सम्पर्क- संदीप थोरी

वार्ड नम्बर 10, उच्चगदेशर, लूनकरणसर (8290811442)



सैपोनिन: पशुओं में अफरा का एक कारण

पशुपालन में अनेक प्रकार की पोषण संबंधी समस्याएँ सामने आती हैं, जिनमें से एक गंभीर समस्या अफरा/ब्लॉट (पेट फूलना) है। यह समस्या मुख्यतः जुगाली करने वाले पशुओं, जैसे गाय, भैंस, भेड़ और बकरी में देखी जाती है। अफरा की स्थिति में पशु के पेट में गैस अत्यधिक मात्रा में भर जाती है, जिससे उसका पेट फूल जाता है और गंभीर मामलों में मृत्यु भी हो सकती है। इस समस्या के प्रमुख कारणों में से एक "सैपोनिन" नामक यौगिक है, जो कई प्रकार के हरे चारे में पाया जाता है।

सैपोनिन :-

सैपोनिन एक प्रकार का ग्लाइकोसाइड यौगिक है, जो अनेक पौधों में प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। यह पानी में घुलकर झाग उत्पन्न करने की क्षमता रखता है। सैपोनिन मुख्यतः "क्लोवर, अल्फाल्फा, ल्यूपिन, फेनुग्रीक (मेथी), सोयाबीन, और कुछ अन्य हरे चारे" में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। यह यौगिक पौधों में एक रक्षा तंत्र के रूप में कार्य करता है, जो कीटों और अन्य शाकाहारी जीवों से बचाव करता है।

अफरा में सैपोनिन की भूमिका :-

जब पशु अत्यधिक मात्रा में सैपोनिन युक्त चारा खाते हैं, तो यह उनके पाचन तंत्र में झाग (फोम) बना देता है। यह झाग जुगाली करने वाले पशुओं के "रुमेन (बड़ा पेट) में गैसों के निष्कासन को बाधित करता है", जिससे गैस अंदर ही फंस जाती है और पेट फूल जाता है। सामान्य रूप से, पशु डकार (belching) के माध्यम से पेट में बनी गैस को बाहर निकालते हैं, लेकिन सैपोनिन के कारण बनने वाला झाग इस प्रक्रिया को अवरुद्ध कर देता है। परिणामस्वरूप, पशु को अफरा की समस्या हो जाती है।

सैपोनिन से प्रभावित पशुओं में निम्नलिखित लक्षण देखे जा सकते हैं:

- **पेट का अत्यधिक फूलना** – विशेष रूप से बाएँ ओर का भाग ज्यादा फूला हुआ प्रतीत होता है।
- **असामान्य व्यवहार** – पशु बेचौनी महसूस करता है, बार-बार खड़ा होता और बैठता है।
- **डकार न आना** – गैस बाहर नहीं निकल पाती, जिससे पशु को असहजता होती है।
- **सांस लेने में कठिनाई** – अत्यधिक दबाव के कारण फेफड़ों पर प्रभाव पड़ता है, जिससे पशु को सांस लेने में परेशानी होती है।
- **थकान और कमजोरी** – चूंकि गैस पेट में बनी रहती है, इससे पशु सुस्त हो जाता है और चारा खाना बंद कर देता है।

रोकथाम और बचाव के उपाय :-

- ❖ **चारे का चयन** – अत्यधिक सैपोनिन युक्त चारे को नियंत्रित मात्रा में खिलाना चाहिए। अल्फाल्फा, क्लोवर और सोयाबीन के चारे को अन्य चारे के साथ मिलाकर देना चाहिए।
- ❖ **सूखे चारे का मिश्रण** – हरे चारे के साथ भूसा, सूखी घास या अन्य कम सैपोनिन युक्त चारा मिलाने से झाग बनने की संभावना कम हो जाती है।



- ❖ **संतुलित आहार** – पशुओं के आहार में संतुलित मात्रा में खनिज और विटामिन्स शामिल करें, जिससे पाचन तंत्र सुचारु रूप से कार्य करे।
- ❖ **पाचन सुधारक पदार्थों का उपयोग** – पशु आहार में एंटी-फोमिंग एजेंट्स, जैसे वनस्पति तेल या मिनरल ऑयल, मिलाने से सैपोनिन से बनने वाले झाग को कम किया जा सकता है।
- ❖ **धीरे-धीरे आहार परिवर्तन** – यदि पशु का आहार अचानक बदला जाता है, तो यह समस्या उत्पन्न हो सकती है। इसलिए, धीरे-धीरे आहार में परिवर्तन करें।
- ❖ **अफरा के शुरुआती लक्षणों की पहचान** – यदि किसी पशु में शुरुआती लक्षण दिखें तो तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें और आवश्यक उपचार करें।

उपचार के तरीके :-

यदि किसी पशु में अफरा की समस्या उत्पन्न हो गई है, तो निम्नलिखित उपचार किए जा सकते हैं:

- ❖ **पेट पर हल्की मालिश और टहलाना** – इससे गैस के निष्कासन में मदद मिलती है।
- ❖ **ड्रेंचिंग ट्यूब का उपयोग** – पशु चिकित्सक पेट से गैस निकालने के लिए ट्रोकार और कैनुला का उपयोग कर सकते हैं।
- ❖ **दवाइयाँ** – एंटी-फोमिंग एजेंट्स, जैसे पोलोक्सालीन या मिनरल ऑयल, देने से झाग को कम किया जा सकता है।
- ❖ **आहार प्रबंधन** – प्रभावित पशु को कुछ समय तक सैपोनिन युक्त चारा न दें और उसे हल्का व सुपाच्य आहार दें।

सैपोनिन एक महत्वपूर्ण पौधीय यौगिक है, लेकिन इसकी अधिकता जुगाली करने वाले पशुओं के लिए हानिकारक हो सकती है। यह अफरा जैसी गंभीर समस्या को जन्म दे सकता है, जिससे पशु की उत्पादकता और स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। उचित चारा प्रबंधन, संतुलित आहार और सही उपचार पद्धतियों को अपनाकर इस समस्या से बचा जा सकता है। पशुपालकों को चाहिए कि वे अपने पशुओं के आहार पर विशेष ध्यान दें और यदि कोई समस्या उत्पन्न हो तो तुरंत विशेषज्ञ की सलाह लें। इस प्रकार, सतर्कता और सही देखभाल से हम अपने पशुओं को स्वस्थ और उत्पादक बनाए रख सकते हैं।

डॉ. श्रुति गर्ग, डॉ. महेन्द्र सिंह मील
वेटरनरी कॉलेज, नवानिया, उदयपुर



पशुओं के लिए जानलेवा है कर्र रोग

कर्र रोग पशुओं में होने वाला एक घातक रोग है यह एक जानलेवा एनारोबिक पॉयजनिंग है जिसमें पशु की अकाल मौत हो जाती है। राजस्थान के जैसलमेर जिले में पशुओं में इस बीमारी का प्रकोप चल रहा है। यह तेजी से फैलने वाला घातक रोग है, जो क्लोस्ट्रियम बोटुलिन जीवाणु द्वारा उत्पादित बोटुलिनम विष के कारण होता है। यह जीवाणु आमतौर पर मिट्टी, पानी आदि में पाया जाता है। यह कई स्वस्थ घोड़ों, मवेशियों व मुर्गियों की



आंत में पाया जाता है। यह जीवाणु लम्बे समय तक जीवित रहने वाले बीजाणु बनाता है, जिसके कारण यह जीवाणु पर्यावरण में लम्बे समय तक जीवित रहते हैं। यह जीवाणु नम, कम ऑक्सीजन वाले वातावरण जैसे सड़ते हुए शव, कार्बनिक पदार्थ, खराब साईलेज में अनुकूल परिस्थितियाँ आने पर अंकुरित होकर बोटुलिनम विष पैदा करते हैं, जिनको खाने पर पशुओं में यह रोग होता है। यह विष बहुत ही शक्तिशाली होता है। मवेशियों में मुख्य रूप से प्रोटीन, फॉस्फोरस व अन्य लवणों की कमी होने पर हड्डियाँ चबाने, दूषित व सड़ा चारा व साईलेज खाने पर होता है। यह रोग सभी उम्र के पशुओं में होता है। मवेशियों के झुंड में अचानक प्रकोप होने पर पशु बेहोश हो जाते हैं। मांस पेशियों में कमजोरी व पक्षाघात के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। पशु लड़खड़ाकर चलता है, पक्षाघात पिछले पेरों से शुरू होकर सिर की तरफ बढ़ता है। पशु खाने-पीने में असमर्थ होता है तथा जीभ बाहर लटकती रहती है। पशु में लक्षणों का विकास और रोग की प्रकृति विष की मात्रा पर निर्भर करता है। आमतौर पर दूषित पदार्थ खाने पर 2-6 दिनों के भीतर लक्षण दिखाई देने लगते हैं। ज्यादा मात्रा में विष खा लेने पर 12-24 घण्टों में ही लक्षण दिखाई देने लगते हैं। अधिक मात्रा में विष खा लेने पर पशु की मृत्यु हो जाती है। लेकिन हल्के रूप से प्रभावित मवेशियों में अच्छे खानपान और पशुचिकित्सा देखभाल से ठीक किये जा सकते हैं। अतः पशुचिकित्सक की देखरेख में बीमार पशुओं का उचित उपचार करवाना चाहिए। इस रोग का सन्देह होने पर दूषित चारा व फीड को तुरन्त हटा देना चाहिए। पशुओं को कंकाल, शवों, कचरे के ढेर आदि से दूर रखें तथा प्रभावित पशुओं का तुरन्त पशुचिकित्सक से सम्पर्क कर उपचार शुरू करवाना चाहिए साथ ही आहार सम्बन्धित समस्याओं का भी तुरन्त निराकरण करना चाहिए। रोग के नियंत्रण व रोकथाम के लिए पशुओं को उच्च गुणवत्ता वाले फीड ही देना चाहिए। मृत पशुओं के शवों का उचित निस्तारण करना चाहिए तथा स्वस्थ पशुओं में टीकाकरण भी किया जा सकता है। रोग के प्रकोप के समय पशुओं को चरने के लिए भी नहीं ले जाना चाहिए। इस प्रकार उपरोक्त बातों का ध्यान रखकर पशुपालक अपने पशुओं को इस रोग से बचा सकते हैं।

“ धीणे री बात्यां ”

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी
केन्द्रों से प्रसारण



पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी
प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाइन
1800 180 6224

प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच

संपादक

डॉ. दीपिका धूड़िया

डॉ. मनोहर सैन

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

☎ 0151-2200505

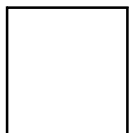
email : deerajuvass@gmail.com

**पत्रिका में प्रकाशित आलेख /
विचार लेखकों के अपने हैं।**

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में



स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच